ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

क्रान्तिकारी गतिविधियों का आरम्भ एवं काकोरी काण्ड

Mk0 vfuy dqekj feJ
,o| foHkkxk/;{k bfrgkl foHkkx
odhy ;kno
'kk/k Nk= bfrgkl foHkkx

असहयोग आन्दोलन के पश्चात सक्रिय हुई देशव्यापी क्रान्तिकारी गतिविधियों को उत्तेजना और सक्रियता वस्तुतः हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं से ही प्राप्त हुई। कानपुर में गणेश शंकर विद्यार्थी एवं पं0 रमाशंकर अवस्थी जेसे पत्रकारिता के विशिष्ट उन्नायकों एवं स्वतंन्त्रता सेनानियों ने अपनी ओजपूर्ण लेखनी से क्रान्तिकारी आन्दोलन को जन आन्दोलन से जोड़ने के साथ ही युवा वर्ग में व्याप्त नैराश्य को दूर कर स्वातंन्त्रय संघर्ष हेतु प्रेरित किया। कानपुर के प्रमुख दैनिक हिन्दी पत्र 'वर्तमान' की टिप्पणी द्रष्टव्य है 'अब साम्राज्यवाद के दुर्गो को ध्वंस करने और स्वराज्य प्राप्त करने का निर्णय लिया गया है। युवक समुदाय इस हेतु भारी से भारी कुर्बानी देने को तैयार बैठा है। अब क्रान्ति दूर नहीं। एक ही झटके में दासता की बेड़ियों को तोड़ दो। जेल और फाँसी के तख़्ते तुम्हारे युद्ध स्थल है। मजदूरों को राष्ट्रीय संग्राम में अपने पूरे शैर्य के साथ अपनी शक्ति को प्रदर्शित करने का समय आ गया है। यह वास्तविक संघर्ष का समय है। अब वह दिन दूर नहीं जब हम जेलों का फाटक खोलेंगे और स्वतन्त्र भारत की ओर से हम अपने–अपने बन्दी बन्धुओं को मुक्त करेंगे।1 एक अन्य अंक में हम क्रान्ति करेंगे शीर्षक लेख में 'वर्तमान' लिखता है कि, हमारी प्रचण्ड, क्रान्ति को हजारों नौकर ााह रोक नहीं सकेंगे। हम गोपनीय ढंग से क्रान्ति की तैयारी करने में लीन है।2

असहयोगेत्तर उत्तर भारत में क्रान्तिकारी तत्वों की बिखरी हुई शक्ति के एकीकरण का परिचय एवं उनके द्वारा सशस्त्र क्रान्ति की दिशा में किये गये प्रयासों की प्रथम परिणति इतिहास प्रसिद्ध काकोरी ट्रेन डकैती की घटना थी। लखनऊ जिलों के काकोरी नामक स्थान पर क्रान्तिकारियों के एक दल ने पं0 राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में 9 अगस्त, 1925 को एक यात्री गाड़ी पर धावा बोलकर सरकारी ख़ज़ाने को लूट लिया। काकोरी ट्रेन डकैती ब्रिटिश शासन के लिए क्रान्तिकारियों द्वारा दी गई एक स्पष्ट चुनौती थी। फलतः ब्रिटिश सरकार ने क्रान्तिकारियों के दमन के लिए इस घटना के संदर्भ में व्यापक आधार पर गिरफ्तारियों और तलाशियों का क्रम शुरू कर दिया।3 यद्यपि इस डकैती में लगभग दस क्रान्तिकारियों ने ही भाग लिया था, परन्तु जब गिरफ्तारियाँ हुई तो 40 से भी अधिक व्यक्ति गिरफ्तार हुए।4

हिन्दी पत्र– पत्रिकाओं में इन गिरफ्तारियों की व्यापक प्रतिक्रिया हुई। काकोरी ट्रेन डकैती के संदर्भ में हुई गिरफ्तारियों की कटु निन्दा और गिरफ्तार व्यक्तियों के साथ जेल में हो रहे व्यवहार की हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं ने भर्त्सना करते हुए सम्पादकीय लेख प्रकाशित किये। अधिकंश पत्र–पत्रिकाओं ने तो असहमति प्रकट की, कि जिन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया है, वे इस प्रकार का गम्भीर अपराध भी कर सकते हैं। पत्रों का विचार था कि ये गिरफ्तारियाँ राजनीतिक गतिविधियों को दबाने और विशेष कर कानपुर कांग्रेस के प्रस्तावित अधिवेशन को ध्यान में रखकर की गई है।5 'प्रताप' ने भी गिरफ्तारियों की निन्दा करते हुए लिखा कि,

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

''गिरफ्तारियाँ करने में जिस प्रकार का निरंकुश, गैर जिम्मेदार और क्रूर तरीका अपनाया जा रहा है, हम उसकी कड़े शब्दों में निन्दा करते है।6

काकोरी ट्रेन डकैती के संदर्भ में ब्रिटिश सरकार द्वारा पहले गिरफ्तारियाँ की गई तदुपरान्त सरकार ने गिरफ्तार अभियुक्तों पर 'काकोरी षड़यन्त्र केस' के नाम से मुकदमा चलाया। अभियुक्तों पर धारा 120, 121, 302 और 396 के अन्तर्गत मुकदमें चलाये गये और 18 महीनों तक चले इस मुकदमें की परिणति पं0 रामप्रसाद विस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी एवं रोशन सिंह जैसे क्रान्तिकारियों को फाँसी की सजा में हुई। पूरक मुकदमें में अशफाकउल्ला खॉ को फाँसी तथा शचीन्द्र नाथ बख्शी एवं शचीन्द्रनाथ सान्याल को काले पानी की सजा मिली। अन्य अभियुक्तों को चौदह वर्ष, दस वर्ष, सात वर्ष एवं पाँच वर्षो की सजा मिली हुई।7

स्वतंत्रता संग्राम में सशस्त्र क्रान्ति के ध्वज को फहराने वाले इन क्रान्तिकारियों को फाँसी और कारावास की सजा सुनाये जाने के बाद देश में इसकी तीखी प्रतिक्रिया हुई। कानपुर की हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं ने देशव्यापी तीखी प्रतिक्रिया को जन स्वर प्रदान किया। इस स्वर में सजा के निर्णय के प्रति क्षोभ, क्लेश एवं ब्रिटिश सरकार के प्रति तिरस्कार की भावना का समावेश था।

फैसले पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उग्र विचारधारा के पत्र 'वर्तमान' ने लिखा कि, ''सजा का निर्णय सामान्यतः चोट पहुँचाने वाला है यह केवल इसी अभागे देश में हो सकता है। कि दिग्भ्रमित देशभक्त को फाँसी पर लटका किया जाये।''8

'प्रताप ने अभियुक्तों की सजा से उनके स्वजनों को होने वाली वेदना का मार्मिक वर्णन करते हुए लिखा, ''ओ, आदर्श! तुम बहुत क्रूर और आतंककारी हो। कोई नहीं जानता कि तुम्हारे लिए कितने भाईयों और बहनों को विलाप करना पड़ेगा। लेकिन जागरूकता का जन्म मात्र बलिदान से ही होता है। माताओं और बहनों की आँखों से निकला आँसू गंगा और यमुना की तरह पवित्र है और यह कायरता और दास मनोवृत्ति को निश्चित ही धो देगा।''9

परन्तु परतन्त्र भारत के पराधीन समाचार पत्रों की इन टिप्पणियों का ब्रिटिश सरकार के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और न ही सरकार ने जनरोष पर कोई ध्यान दिया। अन्ततः जनभावना की उपेक्षा कर ब्रिटिश सरकार ने सर्वप्रथम राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को 17 दिसम्बर , 1927 को गोंडा जेल में फाँसी पर लटाका दिया । लाहिड़ी को मृत्यु की गोद में भेजने के बाद 19 दिसम्बर, 1927 को गोरखपुर जेल में पं0 राम प्रसाद बिस्मिल को, फैजाबाद जेल में अशफाकउल्ला खाँ को तथा प्रयाग के जिला जेल में रोशन सिंह को फाँसी दे दी गयी।10 काकोरी काण्ड के इन वीर क्रान्तिकारियों के प्राणोत्सर्ग की घटना ने सम्पूर्ण देश को शोक संतप्त कर दिया। क्रान्तिकारियों से सहानुभूति रखने वाले प्रताप ने फाँसी की सजा मिलने के बाद जो टिप्पणी की वह द्रष्टव्य है–'' कितना क्रूर समापन रहा ? इन्हें मार्गच्युत कहा जा सकता है। लेकिन इनका अपराध क्या था, सिवा इनके कि वे आवेश और देश भक्ति की भावना से भरे हुए युवक थे। यह जानते हुए भी कि ये युवक गलत मार्ग पर थे, काकोरी काण्ड के मुकदमें के स्वाँग का अध्ययन करने के बाद एक बात विचारणीय हो जाती है कि इस देश में नौजवान होना एक महान अपराध है।11

''प्रताप'' में प्रयाण कर चुके वीरों को श्रद्धांजलि शीर्शक लेख में कहा गया कि, ''यद्यपि तुम गलत मार्ग पर थे, फिर भी तुमने हमारे दिलों पर अधिकार कर लिया है। हम सच्चाई को कुचलकर कुछ भी तो नहीं प्राप्त कर सके। हम तुम्हारे बलिदानी तरीकों को पसन्द करते है। हमने तुम्हें उजाले में देखा है। तुम हम सबमें अग्रणी हो। हम सभी कायर है।''12

उग्र विचाराधारा के समर्थक कानपुर के 'वर्तमान' ने भी काकोरी काण्ड के बन्दियों को फाँसी देने के विरूद्ध भाव प्रधान लेख एवं टिप्पणियाँ प्रकाशित कीं। 'वर्तमान' ने क्रान्तिकारियों का पक्ष समर्थन

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

करते हुए लिखा, ''शान्ति और व्यवस्था के नाम पर हमारी आशाओं का मटियामेट कर दिया गया और हमारे आजादी के दीवाने सैनिकों को फाँसी पर लटका दिया गया। ओह! कैसी निष्ठुरता! कैसी निर्ममता है। यह! भयानक क्रूरता! मनुष्य का हृदय टूटता जा रहा है और सहानुभूति समाप्त होती जा रही है।''13

फाँसी के पूर्व गोरखपुर कारागार में लिखित अपनी आत्मकथा की पाण्डुलिपि को पं0 रामप्रसाद बिस्मिल ने जेल अधिकारियों की दृष्टि से बचाकर दशरथ प्रसाद द्विवेदी के पास भेजा था जिसे बाद में श्री गणेशशंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप प्रेस' कानपुर से 'काकोरी के शहीद' नामक पुस्तक के अग्रभाग में प्रकाशित किया था।14

साम्यवादी पत्र–पत्रिकाएँः

इसी कालवधि में भारत में जिन नई क्रान्तिकारी शक्तियों का उदय हुआ और जिनसे स्वातन्त्रय आन्दोलन को संघर्ष की नई प्रेरणा मिली वह तत्व मजदूरों और किसानों की स्वतन्त्र शक्ति थी। डा0 ए0आर0 देसाई के अनुसार रूस में समाजवादी क्रान्ति की सफलता और साम्यवादी राज्य की स्थापना ने भारत के क्रान्तिकारी राष्ट्रवादियों में समाजवादी एवं साम्यवादी सिद्धान्तों के प्रति रूचि उत्पन्न कर दी थी।15 यही नहीं, रूसी क्रान्ति ने भारत में मजदूर संगठनों की स्थापना के कार्य को भी गति प्रदान की। परिणामतः 1917 के पश्चात् भारत में अनेक मजदूर संगठनों की स्थापना हुई।16 जिन पर साम्यवादी विचारधारा का व्यापक प्रभाव था।

साम्यवादी एवं समाजवादी विचारधारा का प्रभाव कानपुर की हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं पर भी पड़ा। कई राष्ट्रवादी पत्र–पत्रिकाओं में 'बोल्शेविक' के प्रचार–प्रसार हेतु रचनाएँ प्रकाशित होने लगी थीं। 1920 की सरकारी रिपोर्ट के अनुसार ब्रिटिश सरकार के न चाहते हुए भी राष्ट्रवादी पत्र–पत्रिकाओं में बोल्शेविज्म का प्रचार–प्रसार हो रहा था। अन्य पत्रों के अतिरिक्त कानपुर के 'प्रताप' में भी ऐसे साहित्य को विशेष रूप से प्रकाशित किया जाता था।17 बाद में कानपुर का 'वर्तमान' साम्यवादी प्रकाशनों में अग्रणी हो गया। उसका स्वर गाँधीवादी होते हुए भी उसमें साम्यवादी रचनाएँ प्रकाशित हाने लगी थीं।18

किसान–मजदूर आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में उभरे समाजवादी एवं साम्यवादी आन्दोलन के प्रति ब्रिटिश सरकार की दमन नीति की राष्ट्रवादी हिन्दी पत्रों ने निन्दा भी की। 1924 के कानपुर षड़यन्त्र केस' की चर्चा करते हुए 'वर्तमान' ने अपनी टिप्पणी में लिखा था, ''आरोप निराधार है। पूँजीवादी नौशकरशाही यह कदापि नहीं चाहती है कि इस देश में समाजवादी सिद्धान्तों का प्रसार हो। लेकिन क्या यह कोई बता सकता है कि इस प्रकार के मुकदमों को प्रारम्भ कर कोई शक्ति ज्ञान ज्योति को बुझा सकेगी।19 प्रभा ने तो अपने एक अंक में मुख पृष्ठ पर 'कानपुर षड़यन्त्र केस' के अभियुक्तों के चित्र सहित उन पर विशेष रचनाएँ प्रकाशित की।20

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में भगत सिंह का पदार्पणः

काकोरी काण्ड के बाद भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन के रंगमंच पर जिस महामानव का पदार्पण हुआ वे– सरदार भगत सिंह। इस युग के क्रान्तिकारी आन्दोलन के मुख्य सेनापति थे चन्द्रशेखर आजाद और उनके महान योद्धा भगत सिह थे।21

सन् 1924 में अपने विवाह के प्रति अरूचि के कारण जब भगत सिंह अपना गृहत्याग कर कानपुर आये थे, तभी उनकी भेंट कानपुर के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी और बाद में काकोरी षडयन्त्र के अभियुक्त सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य एवं क्रान्तिकारियों के घनिष्ट मित्र 'प्रताप' सम्पादक गणेश शंकर विद्यार्थी से हुई थी। कुछ समय तक उन्होने प्रताप के सम्पादकीय विभाग में कार्य भी किया था।22 1927–28 तक आते–आते सरदार भगत सिह क्रान्तिकारी दल के एक प्रमुख नेता एवं दल के एक महत्वपूर्ण अंग बन चुके थे। काकोरी की घटना के बाद छिन्न–भिन्न हो चुके क्रान्तिकारी संगठन के

अवशेष को एक सूत्र में बाँधने का महत्वपूर्ण कार्य भगतसिंह ने ही किया था।

सन् 1921 में महात्मा गाँधी द्वारा प्रारम्भ किया गया अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन यद्यपि चौरी–चौरा की हिंसात्मक घटना के बाद स्थगित कर दिया गया था, तथापित भारतीयों में स्वातन्त्रयाकांक्षा की अग्नि बुझी नहीं थी। 1927 में जबकि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन अवसादपूर्ण स्थिति में था, असहयोग आन्दोलन तथा स्वराज्यवादियों की नीति प्रायः असफल हो चुकी थी और देश में क्रान्तिकारी शक्तियाँ अपना पैर जमा रही थीं, ब्रिटिश सरकार ने 1919 के भारत सरकार अधिनियम के अन्तर्गत भारत के शासन विधान की जाँच–पड़ताल करने हेतु 8 नवम्बर 1927 को सर जान साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन की नियुक्ति की। इस कमीशन के समस्त सात सदस्य अंग्रेज थे।23 कमीशन में एक भी भारतीय के सम्मिलित न किये जाने से भारतीयों ने इसे राष्ट्रीय अपमान समझा। फलतः भारतीय जन–मानस क्षुब्ध हो उठा और इसके प्रति भारत के राजनीतिक क्षेत्रों में प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई। प्रायः सभी दालों एवं वर्गो के नेताओं ने कमीशन की नियुक्ति के विरूद्ध रोषपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त की।24

इस कमीशन की नियुक्ति के विरूद्ध देशव्यापी क्षोभ और क्रोध की मूकवाणी को कानपुर की हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं ने भी स्वर प्रदान किया। कानपुर के राष्ट्रवादी तेजस्वी पत्र 'प्रताप' ने कमीशन के बहिष्कार के प्रस्ताव की सफलता में सन्देह व्यक्त करते हुए लिखा, – हम यह मानने के लिए तैयार नहीं हैं कि कमीशन में भारतीयों के सम्मिलित हो जाने से जनता का कल्याण हो सकेगा। भारत हमारा है। भारत के भाग्य के निर्णय में ब्रिटिश संसद या स्टेच्यूटरी कमीशन मध्यस्थ नही हो सकता।

अतः भावना एवं उत्साह के लाल अंगारों पर जमी हुई राख को हटाने का कार्य कानपुर के राष्ट्रवादी हिन्दी पत्रों ने भी अपनी पूरी शक्ति के साथ किया। स्वतन्त्रता संग्राम की इस घड़ी में कानपुर की हिन्दी पत्रकारिता ने विभिन्न तरीकों से अपना योगदान देकर महात्मा गाँधी के कार्यक्रमों के प्रति जनमत का उत्साहवर्धन किया। 'विदेशी कपड़े का उपयोग देश के साथ विश्वासघात है' शीर्षांकित एक प्रमुख लेख में 'प्रताप' ने लिखा, ''हमारे राष्ट्रीय संगठन कांग्रेस ने पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी है ओर अब हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि या ता हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करें या अपने को उत्सर्ग कर दें।''25

lUnHkZ xzUFk&

1. का0नो0 प्रेस, यू0पी0, सप्ताहांत, 7 जनवरी, 1923
2. वही
3. गुप्त, मन्मथनाथ, ''भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास'', दिल्ली, 1966, पृ0 244–48
4. वही
5. का0नो0प्रेस, यू0पी0, सप्ताहांत, 17 अक्टूबर, 1925
6. वही
7. गुप्त, मन्मथनाथ, पूर्वोधृत, पृ0 249–50
8. का0नो0 प्रेस, यू0पी0, सप्ताहांत, 16 अप्रैल, 1927
9. वही
10. गुप्त, मन्मथनाथ, पूर्वोधृत, पृ0 249–50
11. का0नो0 प्रेस, यू0पी0, सप्ताहांत, 16 अप्रैल, 1927
12. का0नो0 प्रेस, यू0पी0, सप्ताहांत, 7 जनवरी 1928
13. वही
14. भगवानदास माहौरः भूमिका, दृष्टव्यः बिस्मिल, रामप्रसाद, ''आत्मकथा'', दिल्ली, जुलाई 1958 पृ0 ट, ठ ।
15. देसाई, ए0आर0, पूर्वोधृत, पृ0 140
16. ब्रह्मानन्द (डा0), पूर्वोधृत, पृ0 286
17. राय, सुबोध (सपा0), ''कम्युनिज्म इन इण्डिया अनपब्लिश्ड डॉक्यूमेन्टस, (1919–24)'', कलकत्ता 1971, पृ0 57
18. मेमोरंडम ऑन न्यूज पेपर्स, यू0पी01922 पृ04 (उ0प्र0 अभिलेखागार) एवं वही 1923 दृष्टव्य, होम पोल0 फा0 284' 1924, पृ0 446 (भार0रा0 अभिलेखागार)
19. का0नो0 प्रेस, यू0पी0, सप्ताहांत, 31 मई, 1924
20. 'प्रभा', जून, 1924
21. दयोल, गुरूदेव सिंह, ''शहीद भगत सिंह (एक जीवनी)'' नई दिल्ली, 1971, पृ0 29–33
22. गुप्त, मन्मथनाथ, ''क्रान्तिदूत भगत सिंह और उनका युग'', द्वितीय संस्करण, दिल्ली, 1975, पृ0 102–04
23. कीथ, ए0बी0, 'ए कांस्टीच्यूशनल हिस्ट्री ऑफ इण्डिया (1600–1935)'', इलाहाबाद, 1961, पृ0 88–89
24. ताराचन्द, (डा0) पूर्वोधृत, पृ0 67–68
25. का0नो0प्रेस, यू0पी0, सप्ताहांत, 19 नवम्बर 1927